सब्त और रविवार के विषय 100 अद्भुत तथ्य

सब्त पालन क्यों करना चाहिए? सब्त का उद्धेश्य क्या है? इसे किसने बनाया? इसे कब और किसके लिए बनाया गया? कौन सा दिन सच्चा सब्त है? कई लोग सप्ताह के पहले दिन, यानी रविवार को मानते हैं। ऐसा करने के लिए उनके पास बाइबल से क्या अधिकार प्राप्त है? कुछ लोग सातवें दिन, यानी शनिवार को मानते हैं। उनके पास पवित्रशास्त्र से क्या प्रमाण है? परमेश्वर के वचन में वर्णित इन दो दिवसों के विषय में यहाँ कुछ तथ्य दिए गए हैं:

1. सप्ताह के प्रथम छः दिनों में इस पृथ्वी की सृष्टि के काम को समाप्त करने के बाद, महान परमेश्वर ने सातवें दिन को विश्राम किया। (**उत्पत्ति 2:1, 3.**)

2. इससे उस दिन को परमेश्वर के विश्राम दिन मुहर लग गया, यानी सब्त दिन, क्योंकि सब्त दिन का अर्थ विश्राम दिन है। उदाहरण के लिए: जिस दिन व्यक्ति का जन्म होता है, वो दिन उस व्यक्ति का जन्मदिन बन जाता है। इसी प्रकार जब परमेश्वर ने सातवें दिन को विश्राम किया, तो वह दिन उसके विश्राम का दिन बन गया, यानी सब्त दिन।

3. इसलिए सातवाँ दिन सदा परमेश्वर का विश्राम दिन ठहरेगा। क्या आप अपने जन्मदिन को बदल सकते हैं? नहीं। न ही आप परमेश्वर के विश्राम दिन को, जिसमें उसने विश्राम किया था, बदल कर उस दिन को बना सकते हैं जिस दिन उसने विश्राम किया ही नहीं था। इस प्रकार से आज भी सातवाँ दिन ही परमेश्वर का विश्राम दिन है।

4. सृष्टिकर्त्ता ने सातवें दिन को विश्राम किया। (**उत्पत्ति 2:3.**)

5. उसने सातवें दिन को पवित्र ठहराया। (**निर्गमन 20:11.**)

6. अदन की वाटिका में उसने उस दिन को सब्त बनाया। (**उत्पत्ति 2:1-3.**)

7. यह पाप से पहले बनाया गया था; इसलिए यह रूप नहीं है; क्योंकि रूपों का शुरूआत पाप के आने के बाद ही हुआ।

8. यीशु कहता है कि यह मनुष्य के लिए बनाया गया है (**मरकुस 2:27.**), यानी की, मानव जति के लिए, क्योंकि मनुष्य शब्द यहाँ असीमित है; इस प्रकार से यह यहूदियों और गैर यहूदियों, दोनों के लिए है।

9. यह सृष्टि का स्मारक है। (**निर्गमन 20:11; 31:17.**) जब भी हम, सातवें दिन को विश्राम करते हैं, जिस तरह से परमेश्वर ने सृष्टि के समय विश्राम किया था, हम उस महान घटना का स्मरण करते हैं।

10. यह मानव जाति के मुखिया, आदम, को दिया गया था। (**मरकुस 2:27; उत्पत्ति 2:1-3.**)

11. इस प्रकार से हमारे प्रतिनिधि होने के नाते उसके द्वारा सभी राष्ट्रों को दिया गया है। (**प्रेरितों 17:26.**)

12. यह यहूदी रिवाज़ नहीं है, क्योंकि यह प्रथम यहूदी के इस पृथ्वी में आने से 2,300 वर्ष पूर्व बनाया गया था।

13. बाइबल कहीं पर भी इसे यहूदी सब्त नहीं कहती है, परन्तु हमेशा "सातवाँ दिन तेरे परमेश्वर यहोवा के लिये विश्रामदिन है" लिखा है। मनुष्य को इस बात का ध्यान रखना चाहिए कि वे परमेश्वर के पवित्र विश्राम दिन की निन्दा न करे।

14. पुरनियों के समय में भी सब्त और सात-दिवसीय सप्ताह का भरपूर ज़िक्र है। (**उत्पत्ति 2:l-3; 8:10,12; 29:27,28. आदि**)

15. सिनाई से पहले भी यह परमेश्वर की आज्ञा का हिस्सा था। (**निर्गमन 16:4, 27-29.**)

16. उसके बाद परमेश्वर ने इसे अपने नैतिक आज्ञा के हृदय में रखा। (**निर्गमन 20:1-17.**) उसने इसे वहाँ क्यों रखा यदि वह बाकी नौ आज्ञाओं के समान नहीं है, जिन्हें सभी मानते हैं कि वे अपरिवर्त्य हैं?

17. सातवें-दिन के सब्त की आज्ञा जीवित परमेश्वर की वाणी से दी गई है। (**व्यवस्थाविवरण 4:12,13.**)

18. तब उसने दस आज्ञाओं को अपनी उंगली से लिखा। (**निर्गमन 31:18.**)

19. उसने चिरस्थायी पत्थर पर उसे उकेरा जो इस बात की ओर इशारा करता है कि यह अविनाशी है। (**व्यवस्थाविवरण 5:22.**)

20. वह पवित्रता के साथ महा पवित्रस्थान के संदूक में रखी गई। (**व्यवस्थाविवरण 10:1-5.**)

21. परमेश्वर ने सब्त के दिन काम करने से मना किया, भले ही कितनी भी मजबूरी हो। (**निर्गमन 34:21.**)

22. परमेश्वर ने इस्राएलियों को जंगल में नाश कर दिया क्योंकि उन्होंने सब्त का पालन नहीं किया। (**यहेजकेल 20:12, 13.**)

23. यह सच्चे परमेश्वर का चिन्ह है, जिसके द्वारा हम उसके और झूठे देवताओं के बीच अंतर कर सकते हैं। (**यहेजकेल 20:20.**)

24. परमेश्वर ने प्रतिज्ञा दी थी कि यदि यहूदी लोग सब्त का पलन करेंगे तो यरूशलेम सर्वदा बसा रहेगा। (**यिर्मयाह 17:24, 25.**)

25. परमेश्वर ने उन्हें सब्त तोड़ने के दण्ड स्वरूप बेबीलोन में बंधुवाई में भेज दिया। (**नहेम्याह 13:18.**)

26. सब्त का अवमानना के लिए उनसे यरूशलेम का विनाश किया। (**यिर्मयाह 17:27.**)

27. परमेश्वर ने इसे मानने वाले सभी गैर यहूदियों के लिए एक विशेष आशीष का वादा किया है। (**यशायाह 56:6, 7.**)

28. यह उस भविष्यवाणी में है जो पूरी तरह से मसीही व्यवस्था की ओर इशारा करती है। (**यशायाह 56 पढ़ें।**)

29. परमेश्वर ने उन सभी लोगों को आशीष देने का वादा किया है जो सब्त पालन करते हैं। (**यशायाह 56:2.**)

30. परमेश्वर हम सब को इसकी "सम्मान" कर की आज्ञा देता है। (**यशायाह 58:13.**) वे सभी लोग सावधान हो जाएँ जो इसे "पूराना यहूदी सब्त," "बंधुवाई का बोझ," आदि कहते हैं।

31. "कई पीढ़ियों" तक पवित्र सब्त के अवमानना के बाद इसे अंतिम दिनों में पुनःस्थापित किया जाएगा। (**यशायाह 58:12, 13.**)

32. सभी पवित्र नबियों ने सातवें दिन का पालन किया।

33. जब परमेश्वर का पुत्र आया, तब उसने भी जीवन भर सातवें दिन का पालन किया। (**लूका 4:16; युहन्ना 15:10.**) इस प्रकार से उसने अपने पिता के सृष्टि के समय के उदाहरण का अनुपालन किया। क्या हम पिता और पुत्र, दोनों, के उदाहरण का पालन करने से सुरक्षित नहीं रहेंगे?

34. सातवाँ दिन प्रभु का दिन है। (**प्रकाशितवाक्य 1:10**; **मरकुस 2:28**; **यशायाह 58:13**; **निर्गमन 20:10. पढ़ें**)

35. यीशु सब्त का प्रभु था, (**मरकुस 2:28**) यानी, वह उससे प्रेम करता था और उसकी रक्षा

करता था, जैसा कि पति अपनी पत्नी का प्रभु है ताकि वह उससे प्रेम करे और उसका ध्यान रखे। (**1 पतरस 3:6.**)

36. उसने इस बात की पुष्टि की कि सब्त एक अनुग्राही व्यवस्था है जो मनुष्य के भले के लिए बना है। (**मरकुस 2:23-28.**)

37. सब्त को समाप्त करने के बजाए उसने ध्यानपूर्वक सब्त का सही पालन करना सिखाया। (**मत्ती 12:1-13.**)

38. उसने अपने चेलों को सिखाया कि सब्त दिन सिर्फ़ वही करना चाहिए जो "भला" है। (**मत्ती 12:12.**)

39. अपने पुनरूत्थान के चालीस दिन बाद उसने अपने चेलों को प्रार्थना के साथ सब्त पालन करने का निर्देश दिया। (**मत्ती 24:20.**)

40. जो धर्मी महिलाएँ यीशु के साथ थीं उन्होंने उसकी मृत्यु के बाद सावधानीपुर्वक सब्त का पालन किया। (**लूका 23:56.**)

41. यीशु के पुनरूत्थान के तीस साल बाद पवित्र आत्मा ने स्पष्ट रूप से इसे "सब्त दिन" कहा। (**प्रेरितों 13:14.**)

42. गैर-यहूदियों के प्रेरित, पौलुस, ने इसे 45 ई. में "सब्त दिन" कहा। (**प्रेरितों 13:27**) क्या पौलुस को इसकी जानकारी नहीं था? या क्या हमें आधुनिक शिक्षकों पर विश्वास करना चाहिए, जो दावे के साथ कहते हैं कि सब्त यीशु के पुनरूत्थान में समाप्त हो गया?

43. प्रेरित मसीही इतिहासकार लूका ने 62 ई. में भी इसे "सब्त दिन" कहा। (**प्रेरितों 13:44.**)

44. गैर-यहूदी मसीहियों ने इसे सब्त कहा। (**प्रेरितों 13:42.**)

45. 49 ई. के मसीही बैठक में प्रेरितों और हज़ारों अनुयायियों की उपस्थिति में याकूब ने इसे "सब्त दिन" कहा। (**प्रेरितों 15:21**)

46. इस दिन प्रर्थना सभा आयोजित करने का रिवाज़ था। (**प्रेरितों 16:13.**)

47. सार्वजनिक सभाओं में इस दिन पौलुस पवित्रशास्त्र पढ़ता था। (**प्रेरितों 17:2, 3.**)

48. उस दिन उपदेश देना उसका रिवाज था। (**प्रेरितों 17:2,3.**)

49. प्रेरितों के काम पुस्तक में ही चौरासी बार इस दिन पौलुस द्वारा सभा आयोजित करने का उल्लेख है। (**प्रेरितों 13:14, 44; 16:13; 17:2; 18:4. 11 पढ़ें।**)

50. मसीहियों और यहूदियों के बीच कभी भी सब्त को ले कर कोई विवाद नहीं था। यह इस बात का प्रमाण है कि उन दिनों में भी मसीही और यहूदी एक ही दिन उपासना करते था।

51. पौलुस के ऊपर उन्हेंने जितने भी आरोप लगाए थे, उसमें सब्त उल्लंघन का आरोप नहीं था। यदि वह सब्त का पालन नहीं कर था तो उन्होंने आरोप क्यों नहीं लगाया?

52. परंतु पौलुस ने स्पष्ट तौर पर प्रकट किया कि वह आज्ञा का पालन करता था। "मैंने न तो यहूदियों की व्यवस्था के और न मन्दिर के, और न ही कैसर के विरुद्ध कोई अपराध किया है।" **प्रेरितों 25:8.** यदि उसने सब्त पालन नहीं किया होता तो यह कैसे सच हो सकता है?

53. नए नियम में उनसठ बार सब्त का ज़िक्र किया गया है, और हमेशा ही सम्मान के साथ पुराने नियम में दिए गए उपाधि से ही किया गया, यानि "सब्त दिन" कहा गया है।

54. सब्त के समाप्त किए जाने, या बदले जाने के विषय में नए नियम में कहीं भी एक भी शब्द नहीं कहा गया है।

55. परमेश्वर ने कभी भी किसी भी व्यक्ति को ऐसा करने की अनुमति नहीं दी है। पाठक, आप किस अधिकार से सातवें दिन को रोज़मर्रा के काम करने के लिए प्रयुक्त करते हैं?

56. नए नियम के किसी भी मसीही ने, पुनरूत्थान से पहले या बाद में कभी भी रोज़मर्रा के काम सातवें दिन को नहीं किया। ऐसा एक भी वाक्य ढूढ़ कर दिखाइये, और हम इस विषय में समर्पण कर देंगे। आधुनिक मसीहियों को बाइबल के मसीहियों के जैसा क्यों नहीं करना चाहिए?

57. कहीं कोई अभिलेख नहीं है कि जो इस बात की पुष्टि करे की परमेश्वर ने सातवें दिन से अपनी आशीष या पवित्रता को हटा लिया है।

58. जिस प्रकार से पाप से पहले अदन की वाटिका में सब्त माना गया, उसी प्रकार नई पृथ्वी पर भी सदा के लिए सब्त माना जाएगा। (**यशायाह 66:22, 23.**)

59. सातवाँ-दिन सब्त परमेश्वर के आज्ञा का महत्वपूर्ण भाग है, क्योंकि यह उसके मुँह से निकला है, और सिनाई में उसने अपनी उँगली से पत्थर पर लिखा। (**निर्गमन 20 पढ़ें।**) जब यीशु ने अपना काम शुरू किया, तब उसने स्पष्ट रूप से कहा कि वह आज्ञा को नाश करने नहीं आया था। "यह न समझो, कि मैं व्यवस्था या भविष्यद्वक्ताओं की पुस्तकों को लोप करने आया हूँ।" **मत्ती 5:17**

60. यीशु ने फरीसियों को कपटी कह कर लताड़ा क्योंकि वे परमेश्वर से प्रेम करने का ढोंग तो करते थे परन्तु अपने रिवाज़ों के द्वारा दस आज्ञाओं में से एक आज्ञा की अवमानना करते थे। रविवार को मानना मनुष्यों का रिवाज़ है।

सप्ताह के प्रथम दिन के बारे बाइबल के 40 तथ्य

1. बाइबल में उल्लेखित पहली बात रविवार यानि सप्ताह के पहले दिन किया गया काम है। (**उत्पत्ति 1:1-5.**) सृष्टिकर्त्ता ने खुद यह किया। यदि परमेश्वर ने रविवार को पृथ्वी को बनाया तो क्या रविवार को काम करना हमारे लिए गुनाह होगा?

2. परमेश्वर मनुष्यों से सप्ताह के पहले दिन काम करने की आज्ञा देता है। (**निर्गमन 20.8-11.**) परमेश्ववर का आज्ञा माना क्या गलत है?

3. किसी भी पुरनिये ने इसे कभी नहीं माना।

4. किसी भी पवित्र नबी ने इसे कभी नहीं माना।

5. परमेश्वर की आज्ञा से उसके पवित्र लोगों ने कम से कम 4,000 वर्षों तक सप्ताह के पहले दिन को रोज़मर्रा के आम दिनों के तरह प्रयोग किया।

6. परमेश्वर खुद इसे "काम" का दिन कहता है। (**यहेजकेल 46:1.**)

7. परमेश्वर ने इस दिन विश्राम नहीं किया।

8. उसने कभी भी इसे आशीष नहीं दी।

9. यीशु ने इस दिन विश्राम नहीं किया।

10. यीशु एक बढ़ई था (**मरकुस 6:3**), और वह अपने कार्यस्थल पर तीस वर्ष की उम्र तक काम करता रहा। वह सब्त मानता और सप्ताह के छः दिन काम करता था, इस बात से सभी सहमत हैं। इस प्रकार से उसने कई रविवार कठिन परिश्रम किया।

11. प्ररितों ने भी उस दौरान रविवार के दिन काम किया।

12. प्ररितों ने कभी भी इस दिन विश्राम नहीं किया।

13. यीशु ने कभी भी इसे आशीष नहीं दी।

14. इसे किसी भी पवित्र अधिकारी के द्वारा आशीष नहीं दिया गया है।

15. इसे कभी भी पवित्र नहीं ठहराया गया है।

16. इसे मानने के लिए कोई आज्ञा नहीं दी गई है, इस प्रकार से इस दिन काम करना पाप नहीं है। "जहाँ व्यवस्था नहीं वहाँ उसका उल्लंघन भी नहीं।" **रोमियों 4:15** (**1 यूहन्ना 3:4 भी पढ़ें।**)

17. नए नियम में कहीं भी इस दिन काम करने की मनाही नहीं है।

18. इसे तोड़ने पर किसी भी तरह के दण्ड का प्रावधान नहीं है।

19. इसे मानने के लिए किसी भी आशीष की प्रतिज्ञा नहीं है।

20. इसे मानने के नियमों के बारे में कोई ज़िक्र नहीं है। यदि प्रभु चाहता की हम इसे मानें तो क्या वह इससे मानने के नियम नहीं बताता?

21. इसे कभी भी मसीही सब्त नहीं कहा गया है।

22. इसे सब्त भी कभी नहीं कहा गया है।

23. इसे कभी भी प्रभु का दिन नहीं कहा गया है।

24. इसे कभी भी विश्राम का दिन नहीं कहा गया है।

25. इसे किसी प्रकार की पवित्र उपाधि नहीं दी गई है। फिर हम इसे पवित्र क्यों कहें?

26. साधरण तौर पर इसे "सप्ताह का पहला दिन" कहा गया है।

27. जहाँ तक अभिलेख दर्शाते हैं, यीशु ने कभी भी इसका ज़िक्र नहीं किया, न ही इसका नाम अपने होठों पर लिया।

28. रविवार शब्द बाइबल में कहीं नहीं पाया जाता है।

29. न परमेश्वर, न ख्रीस्त, न ही प्रेरितों ने रविवार के पवित्र दिन होने पक्ष में कुछ कहा है।

30. नए नियम में आठ बार सप्ताह के पहले दिन का ज़िक्र है। (**मत्ती 28:1; मरकुस 16:2,9; लूका 24:1; युहन्ना 20:1, 19; प्रेरितों 20:7; 1 कुरिन्थियों 16:2.**)

31. इन में छः पद्य सप्ताह के एक ही पहले दिन के विषय कहते हैं।

32. पौलुस ने संतों से उस दिन अपने सांसारिक कामों से निपटने का निर्देश दिया था । (**1कुरिन्थियों 16:2.**)

33. पूरे नए नियम में हम मात्र एक ही बार इस दिन एक धार्मिक सभा के आयोजन को पाते हैं, और वह भी एक रात्रि सभा थी। (**प्रेरितों 20:5-12.**)

34. ऐसे कोई संकेत नहीं मिलते हैं कि जिससे इस बात की पुष्टि हो कि इससे पहले या इसके बाद भी ऐसी सभाएँ होती थीं।

35. इस दिन सभा करना उनका रिवाज़ नहीं था।

36. इस दिन रोटी तोड़ने का कोई रिवाज़ नहीं था।

37. हमारे पास इस दिन ऐसा किए जाने का मात्र एक ही बार उल्लेख है। (**प्रेरितों 20:7.**)

38. वह भी मध्य-रात्रि के बाद किया गया था। (**पद्य 7-11.**) यीशु ने इसे गुरूवार संध्या को मनाया था। (प्रेरितों 22), और चेले कभी कभी इसे प्रतिदिन रखते थे। (**प्रेरितों 2:42-46.**)

39. बाइबल में यह कहीं नहीं लिखा गया है कि सप्ताह का पहला दिन ख्रीस्त के पुनरूत्थान का स्मारक है। यह मनुष्यों का रिवाज़ है, जो परमेश्वर की आज्ञा के विरुद्ध है। (**मत्ती 15:1-9.**) यीशु के गाड़े-जाने और पुनरूत्थान का स्मारक बपतिस्मा है। (**रोमियों 6:3-5.**)

40. आखिरकार, सब्त दिन के बदले जाने या पहले दिन की पवित्रता के विषय में नया नियम पूरी तरह से मौन है।

इस सवाल के विषय में यहाँ बाइबल के एक सौ साधारण तथ्य है जो निर्णयात्मक रूप से बताते हैं कि पुराने और नए नियम में सातवाँ दिन ही प्रभु का सब्त दिन है।*

*Reprinted from a tract published by the Review and Herald Publishing Association about the year 1885.

संबिधित लेख

- 7 Facts About the Seventh Day
- 10 Reasons Why the Sabbath is Not Jewish
- Sabbath References

यह सामग्री www.SabbathTruth.com से ली गई है।

परमेश्वर के वचन का अध्ययन करते हुए पादरी डग से जुड़ें

प्रत्येक मंगलवार
शाम 9:00 बजे

प्रत्येक रविवार
शाम 9:00 बजे

For more times and languages visit:
aftv.in/weekly-broadcast

AMAZING FACTS
India

+91 916 916 4480
+91 916 916 4481

www.AmazingFactsIndia.org • HindiBibleSchool@AFTV.in
©2019 Amazing Facts, Inc. All Rights Reserved. Printed in India.